HAPPY NEW YEAR 2017

मधुबन   ओम् शान्ति   अंक 294   जनवरी 2017

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(11-12-16)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाले, कल्प-कल्प की विजयी आत्मायें, लाइट माइट के डबल ताजधारी, सदा आगे बढ़ने और बढ़ाने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ आने वाले नये वर्ष की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक शुभ कामनायें, बधाईयां।

यह नया वर्ष नया उमंग-नया उत्साह लेकर समीप आ रहा है। बाबा के बच्चे नये वर्ष की बधाईयों के साथ आने वाले नये युग की भी सबको बधाई देते हैं। बाबा कहते बच्चे वन-वन के पहले विन करने वाले विजयमाला के विजयी रत्न बनो। अपनी महानताओं द्वारा सर्व सिद्धियों को प्राप्त करो। जब आपके संकल्प, बोल और कर्म सिद्धि को प्राप्त होंगे तब जयजयकार होगी, इसके लिए हर संकल्प शुद्ध और श्रेष्ठ हो। व्यर्थ और निगेटिव का नाम निशान भी न हो। सदा श्रेष्ठ चिंतन द्वारा सबके शुभचिंतक बनो। तो इस नये वर्ष में सभी यही विशेष कंगन बांधना कि सदा उत्साह में रहेंगे और सबको उत्साह में लाते सदा आगे बढ़ेंगे और बढ़ायेंगे। अब सभी प्रकार की कम्पलेन समाप्त कर स्वयं को कम्पलीट बनायेंगे।

बोलो, मीठे बाबा के इन्हीं इशारों को साकार स्वरूप देते हुए अब विश्व के कोने-कोने में परमात्म प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने का शुभ संकल्प आ रहा है ना। जब अभी जय-जयकार के नारे लगें तब अपना स्वीट घर और स्वीट राजधानी समीप आये।

अब और कुछ सोचने, बोलने की जरुरत नहीं है। बाबा ने इतना सुख दिया है जो अपने समान दाता बना दिया है। मुझे तो लगता है कि हमारे जैसे भाग्यशाली सब बन जायें। जिसके अन्दर जो भी संकल्प हो, आशायें हों सब पूरी हो जायें ताकि इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति सहज बन जाये। लाइफ में जो भी संकल्प आवें वह सेवा अर्थ हों। संकल्प में भी कुछ मांगना न पड़े क्योंकि मांगना रॉयल्टी नहीं है।

मेरे तो दिल में यही गीत बजता रहता है - बाबा आपने मुझे अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया। बाबा का बनकरके सारी लाइफ में एडजेस्ट होकर चले हैं। कभी यह नहीं कहा कि यह बात मुश्किल है, जब कुछ भी मुश्किल नहीं है तो मुस्कराओ। सफेद कपड़ा खीसा खाली और सारे विश्व की सेवा बाबा ने करा ली। सब मेरे बहन भाई हैं, सेवा के लिये हैं, बाकी कोई अटैचमेंट नहीं है क्योंकि सदैव यह स्मृति रहती है कि हम कौन हैं, किसके हैं? इसकी खुशी और नशा बहुत है, अन्दर शान्त रहने की शक्ति है। जितना शान्ति में रहने की आदत होगी उतना अच्छा है। न कोई चिंता है, न चिंतन है। अभी दिल की बात यह है कि कभी भी मेरे को व्यर्थ ख्यालात नहीं आते हैं, पर किसको भी न आयें यह मेरी भावना है। आपस में हमारा यह जो सम्बन्ध है वह बड़ा सच्चा सुखदाई है। ऐसा ईश्वरीय सम्बन्ध सारे कल्प में नहीं होगा।

मैं अपने से पूछती हूँ मैं क्या सेवा करती हूँ? सिर्फ टेन्शन से फ्री रहने का अटेन्शन है। कोई बात का भी टेन्शन नहीं है। बाबा ने ऐसी सिम्पल लाइफ स्टाइल बनाई है जो एक दो को देख करके जैसे कलम लग गया है, अच्छा बगीचा बन गया है। सभी को देख ऐसे लगता है फूलों का बगीचा है, जैसे कमल का फूल पानी में रहते न्यारा है, पर गुलाब का फूल वन्डरफुल है। सभी एक जैसे फूल नहीं होते, थोड़ा साइज़ में या रंग में फर्क होता है पर खुशबू होती है। कोई भी गुलाब के नीचे आगर कांटा होगा तो ऐसे निकाल देंगे। वो दोषी नहीं है, तो बाबा ने यह बगीचा बनाया है, इस बगीचे के आप सभी खुशबूदार फूल हैं। सदा अपनी रूहानियत की खुशबू फैलाते, बेफिक्र, निश्चिंत स्थिति का वायुमण्डल बनाते चलो।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"तपस्वी मूर्त बनो"

1) तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही तपस्वी मूर्त कहते हैं, तो सभी इसी अनुभवों में समा जाओ।

2) तपस्या अर्थात् लगन में मगन, विशेष मन बुद्धि की एकाग्रता से अव्यक्त वतन की सैर करो। चलते-फिरते भोजन करते भी एक की याद में, एक के साथ में भोजन स्वीकार करना - यह भी तपस्या है।

3) जैसे ब्रह्मा बाप के संस्कारों में, हर संकल्प में यही रहा कि बेहद का कल्याण कैसे हो! ऐसे बेहद के तपस्वी बनो। हर सेकेण्ड तपस्या-स्वरूप, तपस्वी मूर्त। मूर्त और सूरत से त्याग, तपस्या और सेवा – साकार रूप में प्रत्यक्ष करो।

4) हरेक यही संकल्प लो कि हमें शान्ति की, शक्ति की किरणें विश्व में फैलानी हैं, तपस्वी मूर्त बनकर रहना है, अब एक दूसरे को वाणी से सावधान करने के बजाए मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ।

5) जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती वा अनुभव होती है। वैसे आपके तपस्या और त्याग की झलक दूर से ही आकर्षित करे। हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे।

6) आपके मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से आत्मिक स्वरूप ही दिखाई दे। भ्रकुटी के बीच में जैसे दिव्य सितारा चमक रहा है। हर आत्मा के प्रति कल्याण का संकल्प वा भावना रहे, दूसरी कोई भावना उत्पन्न न हो।

7) जैसे तपस्वी आसन पर बैठते हैं, ऐसे आप अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान होकर तपस्या करो। आपकी हर कर्मेन्द्रिय से देह-अभिमान का त्याग और आत्म-अभिमानी की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।

8) अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा अपने रहे हुए विकर्मों को भस्म करो साथ-साथ हर आत्मा के तमोगुणी संस्कारों और प्रकृति के तमोगुण को भस्म करने के लिए सकाश देने की सेवा करो। जैसे चित्रों में शंकर को तपस्वी रूप में दिखाते हैं, ऐसे एकरस स्थिति के आसन पर स्थित होकर अपना तपस्वी रूप प्रत्यक्ष दिखाओ।

9) तपस्वी वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते हैं। आप भी इस सृष्टि रूपी वृक्ष में नीचे जड़ में बैठकर तपस्या कर रहे हो। वृक्ष के नीचे बैठने से सारे वृक्ष की नॉलेज बुद्धि में आ जाती है। तो नॉलेजफुल बनकर सारे वृक्ष को शक्तियों का जल दो।

10) जैसे पहले-पहले नशा रहता था कि हम इस वृक्ष के ऊपर बैठकर सारे वृक्ष को देख रहे हैं, ऐसे परमधाम की ऊंची स्थिति में बैठकर नीचे पूरे ग्लोब को सकाश देने की सेवा करो। इससे तपस्या और सेवा दोनों कम्बाइन्ड और एक साथ रहेंगी।

11) समय की समीपता प्रमाण अभी सच्चे तपस्वी बनो। आपकी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या द्वारा शुरू करो।

12) तपस्वी मूर्त का अर्थ है - तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव में आयें। यह तपस्वी स्वरुप औरों को देने का स्वरुप है। जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है। ऐसे महान तपस्वी आत्मायें, मास्टर ज्ञान सूर्य बन शक्तिशाली किरणों की अनुभूति कराओ।

13) अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सब भस्म करो। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। यह आपकी ज्वाला-स्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्जवलित करो जिसमें यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जाये।

14) जैसे दु:खी आत्माओं के मन में यह आवाज शुरू हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन में यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी।

15) जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करो। ''मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, विघ्न-विनाशक आत्मा हूँ'', इस स्वमान के स्मृति की सीट पर स्थित हो जाओ।

16) अब ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प लो और संगठित रूप में मन-बुद्धि की एकाग्रता द्वारा पावरफुल योग के वायब्रेशन चारों ओर फैलाओ। अन्दर यह धुन सदा रहे कि अब वापिस घर जाना है। जाना है अर्थात् सर्व सम्बन्धों से, प्रकृति की आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जाओ।

17) अपनी श्रेष्ठ शान, रुहानी शान की स्थिति में स्थित हो अब लोगों को परेशान करने वाली परिस्थिति को समाप्त करो। अपनी शान से परेशान आत्माओं को शान्ति और चैन का वरदान दो। लाइट हाउस और माइट हाउस स्थिति को समझते हुए, उसी स्वरूप में स्थित हो जाओ।

18) विशेष ज्ञान स्वरूप स्थिति में स्थित हो याद की यात्रा को पॉवरफुल बनाओ। अपनी शुभ वृत्ति व कल्याण की वृत्ति और शक्तिशाली वातावरण द्वारा अनेक तड़पती हुई, भटकती हुई, पुकार करने वाली आत्माओं को आनन्द, शान्ति और शक्ति की

अनुभूति कराओ।

19 अब संगठित रूप में ज्वाला स्वरूप याद का अभ्यास करो। एक एक चैतन्य लाइट हाउस बनकर बैठो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन अभी मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर लाओ।

20) जैसे किले में प्रजा सेफ रहती है। एक राजा के लिए कोठरी नहीं बनाते, किला बनाते हैं। आप सभी भी स्वयं के लिए, साथियों के लिए, अन्य आत्माओं के लिए ज्वाला रूप याद का किला बनाओ। याद को ज्वाला रूप शक्तिशाली बनाओ तो हर आत्मा सेफ्टी का अनुभव करेगी।

21) ज्वाला स्वरूप याद द्वारा पाप कटेश्वर वा पापहरनी बनो। आपकी तपस्या ऐसी शक्तिशाली हो जो अनेक आत्माओं की निर्बलता दूर हो जाए। इसके लिए हर सेकण्ड, हर श्वांस बाप और आप कम्बाइन्ड होकर रहो। स्नेह और शक्ति दोनों रूप कम्बाइन्ड हो।

22) अभी निर्भय, ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है उसे भस्म करो। तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप याद, इस याद द्वारा ही माया वा प्रकृति का विकराल रूप शीतल होगा। आपका तीसरा नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र माया को शक्तिहीन कर देगा।

23) ज्वाला स्वरूप तपस्या के लिए मन और बुद्धि दोनों को पावरफुल ब्रेक दो साथ-साथ मोड़ने की शक्ति हो जिससे बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जाये। इसके लिए संकल्पों का बिस्तर बन्द करते चलो अर्थात् समेटने की शक्ति धारण करो।

24) अपने तपस्वी रूप द्वारा, योग अग्नि द्वारा इस पुराने वृक्ष को भस्म करने वा परिवर्तन करने का संकल्प लो। इसके लिए संगठित रूप में फुलफोर्स से योग ज्वाला प्रज्जवलित करो। एकरस स्थिति के आसन पर एकाग्रचित होकर बैठो। एक की याद में समा जाओ।

25) समय प्रमाण अब तपस्या द्वारा चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा से वायुमण्डल बनाने का कार्य करो। अब इसी सेवा की आवश्यकता है क्योंकि समय बहुत नाज़ुक आ रहा है।

26) अपने तपस्वी स्वरूप में स्थित हो, उड़ती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाओ और जिसको शान्ति चाहिए, खुशी चाहिए, सन्तुष्टता चाहिए, फरिश्ते रूप में उन्हें अनुभूति कराओ।

27) अन्त:वाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति जो आपका अन्तिम वाहन है। अपने उस स्वरूप को सामने इमर्ज कर तीनों लोकों की सैर करो। अपने रहमदिल तपस्वी स्वरूप से परेशान आत्माओं को सर्व शक्तियों की सकाश दो।

28) इस देह की दुनिया में कुछ भी होता रहे, लेकिन आप साक्षी हो सब पार्ट देखते अपने फरिश्ते स्वरूप द्वारा सकाश देते रहो। ऊंची स्टेज पर स्थित हो तपस्वी मूर्त बन सबको सकाश देना तो किसी भी प्रकार के वातावरण का सेक नहीं आयेगा।

29) जैसे बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर के विश्व के बच्चों की पालना कर रहे हैं, ऐसे आप भी एक स्थान पर बैठकर अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा बेहद की सेवा करो। बेहद में सकाश दो।

30) आप ब्राह्मण आदि रत्न विशेष इस वृक्ष के तना हो। वृक्षपति बाप के साथ तपस्वी मूर्त बन पूरे वृक्ष को सकाश दो, कमजोरों को बल दो। अभी ऐसी लहर फैलाओ – देना है, देना है, देना ही देना है।

31) ज्ञान के मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का समय मुकरर करो। विशेष एकान्तवासी बन तपस्वी स्वरूप में स्थित हो विश्व कल्याण की सेवा करो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 30-04-13 *मधुबन*

“बाबा को पहचानने के साथ व्यवहार और सम्बन्ध में एक दो को पहचानने से नम्बर मिलते हैं”

(दादी जानकी)

बाबा बहुत अच्छा है, क्यों? हमारा बाप टीचर बन गया, कल बोला विचार सागर मंथन करो, आज बोला बुद्धि को सतोप्रधान बनाओ। कभी कुछ, कभी कुछ बाबा ऐसा बताता है ताकि हम बिजी रहें, अच्छे-से-अच्छे ज्ञान को धारण करें। अनहोनी बात, इम्पॉसिबुल बात को बाबा पॉसिबुल कर देता है इसलिए बहुत अच्छा बाबा है। बुद्धि सालिम है, बाबा बहुत अच्छा है। एक बाबा दूसरा न कोई तो विक्ट्री है। तो बाबा कितना अच्छा है। व्हाय नहीं कहना है, ऐसे बनना है। विजड़म माना शार्टकट वे है, सिम्पल वे सिर्फ सैम्पुल बनना है, वर्ड ऑफ विजड़म। कैसे करूँ, क्या करूँ... ऐसे नहीं बोलो। सिम्पल बात को बड़ी बात नहीं बनाओ। बड़ी को छोटी बना दो तो दोष नहीं है और औरों का दोष निकालके छोटी बात को बड़ा बनाया तो मेरा दोष हो जायेगा। ऐसा यह क्यों करता? सम्भलके बोल, यह सोचो भी नहीं, मुख से नहीं बोलो। यह वर्डस् मुख से निकलता है, तो विजड़म कैसी है,

कितनी है, अन्दर से दिखाई पड़ता है। अन्दर के चेहरे से दिखाई देता है। इसलिए बुद्धि को सतोगुणी से सतोप्रधान बना दो। थोड़ा भी सोचने बोलने में एक्यूरेट नहीं है तो बाबा देखेगा मैं कुछ और चाहता हूँ यह करता कुछ और है। बात को थोड़ा भी बनाने में नुकसान है, बड़ी को छोटा बनाने में बहुत फायदा है। उसी इशारे से समझ गये जरुरी था समझना जो मिस हो गया था तो शुक्रिया बाबा आपका।

मुख से शब्द ऐसे निकलें जो 20 साल पहले वाले शब्द भी याद आवें तो खुशी की आवाज निकले क्योंकि संगमयुग का महत्व है। जितनी पढ़ाई उतनी कमाई। अन्दर संकल्प की जो शुद्धि है ना, वह औषधि है। यह औषधि जो जितना यूज़ करता है उसके लिये उतना अच्छा होगा। अन्त मते तक बाप, टीचर, सतगुरू तीनों को खुश करना है तो धर्मराज को भी खुश करो। मेरे से तीनों खुश हैं, यही विज़डम है। तीनों को खुश करना माना धर्मराज को खुश करना। है रूप तीन ही लेकिन उसके अन्दर में धर्मराज छिपके ऐसा बैठा है, अभी-अभी सुबह शाम हरेक देखे, मेरी खुशी गुम क्यों हुई? धर्मराज ने सजा दी। अभी देता है थोड़ा कान पकड़के सावधान करने के लिए, जो बाबा ने कहा था मुरली सुनने समय अगर बुद्धि इधर उधर गयी तो योग नहीं है। देखा जाता है सुनता यहाँ है, पर बुद्धि बाहर है तो बात अन्दर नहीं गयी इसलिए बाहर में सबके साथ रहते हुए भी अन्तर्मुखी है तो वो सदा सुखी है। मेरे संग सेवा करने वाले भी सुखी हों। परमात्मा तो सबको सुख शान्ति में सम्पन्न बना देता है माना सुख शान्ति सम्पत्ति है।

तो विज़डम बाबा की है, सुनने वाले आप है, अगर आप न सुनते तो मैं कोई काम की नहीं होती। अपनी बुद्धि को अभिमान से फ्री रखो। अपमान की फीलिंग कभी न आवे, यह मंजिल ऊंची है जाना जरुर है। तो ऊंचे कैसे जायेंगे! सारा दिन ऐसे करूँ, नहीं। ऐसे करने से... एक घण्टा सुनने के साथ-साथ सुख-शान्ति-प्रेम जितना खिंचना हो खींचे, फिर रात को घर में नींद न आये भले, क्या सुना क्या सुना... तो अनुभव ज्यादा होगा। शब्द किसको न भी याद आये इसलिए भगवान के महावाक्य हैं, डिवाइन विज़डम, डिवाइन इनसाइट, दिव्य बुद्धि दिव्य दृष्टि, यह सुनने के बाद रिपीट करने से और गहरा होता जाता है।

हर कार्य में निश्चय से विजय हुई है, यह हम देखते आ रहे हैं इसलिए बाबा हर बात की गहराई में ले जाता है। दुनिया में कितनी गंदगी, कितना फैशन, क्या खाना पीना... नशे में धूत रहते हैं। यह पढ़ाई पढ़ते हैं, जवानी क्या होती है, पढ़ाई क्या होती है, किसलिए वहाँ पढ़ने जाते हैं? जैसी है पढ़ाई, वैसी है यूनिवर्सिटी, वैसे हैं पढ़ने वाले, तो पढ़ाने वाले कौन होंगे? मुझे इस बात की बड़ी खुशी है भारत में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय लिखने की परमीशन मिल गयी और यहाँ गॉड फादरली यूनिवर्सिटी है। यह किसकी कमाल? हमारे यहाँ इतने पढ़ने आते फ्री ऑफ चार्ज। सवेरे सवेरे उठके स्नान पानी करके अमृतवेले क्लास में हाजिर हो जाते हैं। वैसे माया बड़ा धक्का खिलाती है, तरस पड़ता है। अभी हम सब मिल करके उस पार जा रहे हैं। ऐसे नहीं कोई छोटा है, कोई मोटा... नहीं बाबा ऐसा देखना चाहता है, मेरे युनिवर्सिटी के स्टूडेन्ट्स यहाँ बूढे जवान इकट्ठे पढ़ते हैं, इसका उदाहरण सभा में देख सकते हैं। ऐसी युनिवर्सिटी तो सारे कल्प में नहीं देखी। योग लगाते जाओ, सहयोगी बनते जाओ और सहयोगी बनाते जाओ और योगी बना दो यही तो सेवा है। सिर्फ बाबा को जानो, अपने को पहचानो।

कई हैं जो अभी भी अपने को नहीं पहचानते हैं और एक दो को भी जानें इसमें बड़ा धीरज़ चाहिए। रूहानियत चाहिए, मैं एक दो को पहचानूँ, बाबा को पहचानना तो इज़ी था क्योंकि डायरेक्ट योग लगाया, थोड़ा सुख शान्ति मिला पर इसमें मुझे क्या मिलेगा? जरुरी क्या है? व्यवहार और सम्बन्ध में जब आते हैं तब एक दो को पहचानने से नम्बर मिलता है। वो विजड़म कहाँ तक किसमें है, मिल करके रहने की या मिलाने की। जो मिल करके रहता है वो मिलाने के बिगर चल नहीं सकता है, उसको अनुभव है। उसको कभी दूरबाज खुशबाज का ख्याल नहीं आयेगा। इस ख्याल से जो फ्री हुआ, बाबा उनसे अनेक काम करा लेता है। यह बाबा ने आज दिन तक कराया है। तो मैं कहती हूँ जितना बाबा को अपना बनाओ, तो बाबा भी मुझे अपना बनाके हर कार्य कराता है। फिर हर कार्य करते, सम्बन्ध में रहते भी मुस्करा सकते हैं। वृत्ति से दृष्टि महासुखकारी। तो सारा पुरुषार्थ वृत्ति पर है। मन शान्त है तब बुद्धि भी ठीक काम करती है। वृत्ति साफ है तो खुद सतोप्रधान बनने से और भी बन जाते हैं। फिर बाबा बहुत खुश हो जाता है क्योंकि बाबा को ऐसे बच्चे चाहिए।

"भाई बहनों के प्रश्न दादी जानकी जी के उत्तर"

प्रश्नः- हम आपस में मिल करके कैसे काम करें, उसके लिए कुछ बताईये?

उत्तरः- हर एक का अपना-अपना पार्ट है लेकिन समझना चाहिए कि हरेक का क्या पार्ट है, उसके पार्ट अनुसार उसकी बुद्धि चलती है। हरेक के पार्ट में भी अपनी विशेषता है। पहले तो बाबा का बच्चा है, अगर यह नहीं देखेंगे तो विशेषता नहीं दिखाई पड़ेगी। मैं बाबा का बच्चा हूँ, छोटी बेबी नहीं हूँ। समझ से काम लेना है। भगवान के परिचय से हमारी बुद्धि क्लीन हो गयी है।

संगमयुग है, यह बाबा के बच्चे हैं। तो यह सूक्ष्म है, मैं उसी दृष्टि से देखती हूँ, उसी स्मृति में रहती हूँ तो हमारा आपसी व्यवहार अलौकिक हो जाता है। अगर बातों में हैं तो कहाँ-न-कहाँ कोई बात ऐसी है, जो बाप की भी सुनने वाले नहीं हैं तो वही लहर पूरे संगठन में चलती है। जो बाप ने सुनाया है, उस पर अमल करने से कहीं कोई प्रॉब्लम नहीं है। आज नहीं तो कल संग और सहयोग, सच्चाई से समीपता आती है। जो समझ से कैच कर लेते हैं, स्नेह से सहयोगी बन जाते हैं। तो संगठन का किला मजबूत हो जाता है। संगठन में रहते इसको ऐसे नहीं करना चाहिए, ऐसे नहीं कहना चाहिए, यह ख्याल आया ना तो जो बाबा जैसे सिखाता है वो नहीं होता है इसलिए बाबा की शिक्षा से, उस बात को सोचके भारी नहीं हो जाना है। लाइट रहेंगे तो बाबा की माइट औरों को भी ऐसा सहयोग देगी। स्वच्छता, सत्यता और सभ्यता से जो व्यवहार है उससे वायुमण्डल बहुत पॉवरफुल हो जाता है, उसमें सब खींच जाते हैं। जहाँ स्वच्छता है वहाँ बेफिक्र हैं। जहाँ सत्यता है वहाँ जीत है।

समझने में तो समय नहीं लगा पर प्रैक्टिकली जब देखते गये कि जो जो बाबा कहता रहा वह निमित्त हमारे द्वारा होता रहा, उससे पता चलता गया कि यह हमारा पार्ट है। जैसे यह ज्ञान विदेश में जायेगा, सब धर्म वालों को मिलेगा तो आज देखो कहाँ-कहाँ तक यह ज्ञान पहुँच गया है, परमात्मा बाप को जान करके अपने सतयुगी पार्ट का हक ले रहे हैं। हरेक अपने कर्म से भाग्य बना रहे हैं। जितना जिसने इस ज्ञान को अपने जीवन में लाया है उतना उसका फल अच्छा पाया है।

प्रश्न:- आपकी भावना बहुत समय से लगातार मजबूत हो गयी है इसीलिए आपके सामने पत्थर भी आये उसको भी मेल्ट कर सकते हो लेकिन कभी-कभी दादी ऐसे टेस्ट आते हैं कि कोई कोई आत्मायें आपकी भावना को स्वीकार नहीं करती हैं तो उस समय आप क्या अपनी वीज़न में रखते हो, आप क्या देखते हो ताकि अपनी गुड विशेश उस आत्मा के प्रति बदले नहीं, क्योंकि कभी-कभी हम किसी के प्रति कुछ बोलते हैं वो एक्सेप्ट नहीं करते हैं तो सूक्ष्म हमारी भावना बदलती है।

उत्तर:- बिचारे की थोड़ी समझ कम है यह सोचा तो मुझे फीलिंग नहीं आयी। फिर भी मैं भावना रखेंगी अच्छी तरह से, तो वह ठीक हो जाता है। वह आज मुझे नहीं पहचानता है कोई हर्जा नहीं, कल पहचानेगा पर मैं अपनी सीट से क्यों उतर आऊं। सदा हज़ूर के साथ हाजिर रहूं, वह मेरे साथ है, तो कई भिन्न-भिन्न बातें होती हैं फिर भी साक्षी हो करके साथ रहने का नेचुरल नेचर बनाया है। ऐसे नहीं कि हमेशा उन्हीं बातों को दोहराते उसके पीछे लगे रहें, अच्छी-बुरी कोई भी बात है, उन बातों पर हमें चिंतन नहीं करना है क्योंकि इतनी समझदारी से सूक्ष्म अपने आपको सेफ भी रखना है, साफ भी रखना है। तो कभी भी कोई हमारे ऊपर वार करें, नहीं किसकी ताकत नहीं है। तो जितना साफ रहो, सेफ रहो उससे यह फायदा है। तो इन सब बातों को समझकर प्रैक्टिकल में लाने से जो भी भावना या प्राप्ति है, उससे आगे बढ़ना इज़ी हो जायेगा। अच्छा।

4-11-16

"बाबा की नज़र निरोगी निर्विघ्न बनाने वाली है, यह दृष्टि की दवाई महापुण्यकारी है, इसका लाभ लो"

(दिल्ली की टीचर्स बहनों के सम्मुख गुल्जार दादी जी का क्लास)

प्यारा बाबा, अपने एक एक बच्चे को देख कितना खुश हो रहा है। हर एक के आगे बच्चों की कितनी महिमा करता है। अभी टाइम ज्यादा नहीं है तो बाबा चाहता क्या है? दुनिया की सेवा तो कर ही रहे हो लेकिन साथ में अभी साथियों की भी सेवा करनी है। कइयों की तबियत खराब होती है और मौसम ऐसी है जो तकलीफ हो ही जाती। बाबा भी ऐसे टाइम पर हर एक बच्चे को जो तकलीफ में हैं उन पर अपनी दृष्टि से ऐसे नज़र डालता है, जो देखते ही लगता है कि यह नज़र उसे निरोगी वा निर्विघ्न बना रही है। बाबा की वह दृष्टि आपके सामने आ गई ना! आ गई! देख रहे हो! बाबा कितना प्यार से देख रहे हैं, बीमारी कैसी भी हो, ठीक होनी ही चाहिए, ऐसी भी कई बीमारियां हैं लेकिन बाबा की दवाई महापुण्यकारी है। दृष्टि देना बाबा का काम है लेकिन बाबा की दृष्टि का लाभ लेना यह हम बहन, भाइयों का काम है। बाबा के नयन उनके नयनों से मिलते हैं तो उसमें शक्ति आ जाती है। लेने वाला दृष्टि का पूरा लाभ ले लेता है। बाबा की नज़र तो कहाँ भी पहुंच सकती है। चारों ओर उनकी लाइट जो फैलती है वो एक्यूरेट जगह पर फैलती है और वो लाइट ऐसी है जैसे लाइट का फव्वारा उसी जगह पर फैलता है जहाँ किसी को आवश्यकता है। लाइट एक ही है लेकिन कमाल यह है जो सब तरफ फैल जाती है। जैसे यह लाइट जलती है, उसके पहले बाबा द्वारा लाइट जो

फैलती है, उसकी कार्यशीलता इस स्थूल लाइट से पहले ही छा जाती है देखने में आता है कि वो स्थूल लाइट मेडिकल की कुछ कर रही है लेकिन बाबा की लाइट ऐसी तेज है जो गुप्त अपना काम करती रहती है। इसमें आवाज कुछ नहीं लेकिन जिधर वह लाइट जाती है उधर सबके चेहरे बदल जाते हैं। जैसे आप अभी आराम से बैठे हैं ना! अगर किसी को कहीं दर्द है भी तो वह सब भूले हुए हैं। अभी वो कौनसी ताकत है! भले कोई डॉक्टर बनके आये हैं लेकिन वह डॉक्टर तो खुद ही पेशेन्ट है, उसको भी तो शक्ति चाहिए। आजकल पेशेन्ट खुद ही खुद से लाचार होता है, वो घड़ी देखता जाता है, कितना टाइम लगेगा? इतना हो गया बाकी इतना है वो गिनती करता रहता है। तो ऐसी हालत वाले पेशेन्ट को भी यह ज्ञान कितना काम करता है। वो अनुभव ऐसे ज्ञानी पेशेन्ट से सुन सकते हो। आजकल सबको दया बहुत आती है क्योंकि पेशेन्ट बहुत बढ़ते जाते हैं।

कोई भी बीमारी आये उसमें हमको अशरीरी बनना पड़े, बाबा ने हमें जो अशरीरी बनने का तरीका सिखाया है उससे हम शरीर से परे हो जाते हैं। लेकिन इसके लिए बहुत समय का अभ्यास चाहिए। नहीं तो दर्द के समय अशरीरी बन नहीं सकेंगे। शरीर खींचता है। इसके लिये डबल बटन दबाना पड़ता है, इसमें फुल पॉवर चाहिए। इसके लिए विशेष समय निकालकर योग में बैठना होता है। बीमारी में विशेष सबकी परीक्षा होती है। अगर योग की आदत नहीं होगी तो उस समय योग लगेगा नहीं। कमजोरी की ऐसी ऐसी बातें सामने आ जाती हैं, जो बुद्धि भटक जाती है। योग लगाना शुरू भी करते हैं, फिर थोड़े दिन के बाद चेक करते हैं तो कहते फायदा तो बहुत कम है। तो सबसे बड़ी दवाई कौनसी है? जैसे उन दवाइयों में कॉमन लोगों के लिये तो इंजेक्शन है, थोड़े समय के लिए आराम मिल जाता है। लेकिन बहुत समय की बीमारी थका देती है। अगर कोई ऐसा डाक्टर मिलता है जो उनकी मुश्किल को सहज कर देता है। लेकिन सबसे सहज इलाज योग ही है। कई बार पेशेन्ट को उन दवाईयों का इतना इन्ट्रेस्ट आ जाता है जो वो छोड़ना ही मुश्किल है। तो अभी योग बल और मेडिकल बल दोनों ही चलाने की कोशिश करते हैं। लेकिन उससे टेम्प्रेरी टाइम फायदा लगता है। फिर दवाई का एक कोर्स पूरा करते हैं, थोड़े समय के बाद दूसरा कोर्स शुरू हो जाता है। फिर वह करते करते थक जाते हैं इसीलिए बाबा कहता है सब रोगों का इलाज है आध्यात्मिकता, जिससे वो रोग ही नहीं आये। इसमें पहले कन्ट्रोल चाहिए अपने ऊपर, वह भी सिर्फ बाहर का कन्ट्रोल नहीं चाहिए। ज्ञान योग का बल चाहिए। नियमों की भी पालना चाहिए। लेकिन कोई कोई नियम लोगों को ऐसे लगता है कि हम पालन नहीं कर सकते हैं, ऐसे समझके छोड़ देते हैं। योग की ड्रिल करने के लिये, सवेरे उठना भी कईयों को मुश्किल लगता है। तो बीमारी खत्म कैसे होगी। मन के बीमारी की दवाई कोई बाहर नहीं है, वह तो मन के अन्दर ही है।

(आशा बहन ने कहा दादी यह बहिनें कहती हैं - दादी जी की हम सबसे क्या आश है) आश यही है कि सभी बाबा के सामने 100 परसेन्ट पास मार्क्स लेकर दिखायें। जो दुनिया कहती है यह कैसे हो सकता है, वह आप सब करके दिखाओ। ब्रह्माकुमार कुमारी बने ही किसलिए? अपनी जीवन से बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए। तो जो बाबा चाहता है वही करके दिखाना।

(आपका प्यार दिल्ली से है या बॉम्बे से है?)

दिल्ली से प्यार है वा बॉम्बे से प्यार है, यह जानना वा कहना जरूरी नहीं है। (फिर भी आपको किससे ज्यादा प्यार है?) बाबा से। (दादी यह कह दो ना हाँ दिल्ली से प्यार है) एक ही स्थान से प्यार कभी चलता नहीं है। कुछ न कुछ बीच में आ जाता है। पेपर तो आता है। (आपसे सभी का प्यार है?) मेरे से है या नही है, मेरा प्यार बाबा से है और सभी से है। बाबा से प्यार है माना सभी बातों में ठीक है, तभी बाबा से प्यार हो सकता है।

टीचर्स को तो और ही ज्यादा बातों का पता पड़ता है। बाकी सम्पूर्ण तो लास्ट में होंगे, माना लास्ट तक पढ़ना है। परन्तु हमारी पढ़ाई थोड़ी रमणीक है इसीलिए बाबा जो पढ़ाता है ना, पढ़ाता तो बाबा है, तभी टीचर बनते हैं और सर्टीफिकेट मिलता है। हमें जो पढ़ाने वाला है वो कम नहीं है। हम थोड़ी मेहनत करेंगे तो सम्पन्न बन जायेंगे। नाउम्मींदवार भी उम्मीदवार बन सकता है, बना है। सिर्फ अपने में निश्चय रखो। इसने किया मैं भी करूँगा। हर एक बात में टोटल लक्ष्य रखो, सब रीति से करना है। अन्त तक पास होना ही है। लेकिन वह पता तब पड़ेगा जब पेपर हो क्योंकि पेपर के समय सभी की शक्ल दिखाई देती है। पेपर लिखो या न लिखो लेकिन शक्ल से ही पता पड़ता है। फिर भी मेहनत तो करते हो ना, मेहनत की बधाई हो, बाकी पास होना पुरुषार्थ पर है। अच्छा है फिर भी यह स्टूडेन्ट लाइफ सेफ है। अगर पढ़ाई में कोई बिल्कुल ठीक है तो और बातों में भी होगा। उनकी और भी कोई न कोई सबजेक्ट में लगन होगी। बाबा कहता है जो काम करो पूरी लगन से करो। पढ़ाई सिर्फ पढ़ने में शौक होना चाहिए, थोड़ी मुश्किल तो लगेगी। फिर भी पढ़करके लोग इतने बड़े बड़े टाइटल लेते हैं। बहुत अच्छा, आप लोग भी आये हो इम्तहान देने के लिये। डरते तो नहीं हो? ऐसे चालाकी से पास नहीं होना है। वह पास थोड़ेही हुआ, धक्के से पास हुआ। तो सभी ठीक हैं? खुश हैं कि समझते हो यह लाइफ पता नहीं कब पूरी होगी! अन्दर तंग नहीं होना, तंग होके पढ़ेंगे तो आधी पढ़ाई बुद्धि में होगी, आधी फालतू बातें बुद्धि में होंगी फिर मेहनत लगती है। हमेशा जो भी करो पूरे निश्चय से करो कि यह होना ही है। नहीं तो फिर लास्ट में क्या होता है, जब पास और फेल की लाइन लगती है ना, तो उस समय बहुत पश्चाताप होता है। ऐसा करें ही क्यों? कईयों का टाइम तो फालतू घूमने फिरने में बहुत जाता है। अगर वह भी कोई काम में रूचि लेते हैं तो हो जाता है। तो कुछ भी करो लेकिन टाइम पर करो। अगर मानो कोई की खेल में रूचि है तो पढ़ाई के बीच से भी टाइम निकालके वह खेलता है। बाकी अगर पढ़ना है तो सही रीति से अच्छी रीति से पढ़ें, नम्बर

भी अच्छा लेवे, उसको कहेंगे पढ़ा। बाकी किसी से मदद ली, खर्चा किया ज्यादा तो वो क्या हुआ? पढ़ाई नहीं की लेकिन पैसा दिया तो ऐसे नहीं करना। सभी ठीक तो है ना? कोई तकलीफ तो नहीं है, पढ़ने में, पढ़ाने में या अपने आप में ही मुश्किल में हैं! कम पढ़ते हैं, टाइम कम देते हैं, इससे अपने आपको भी मुश्किल में लाते हैं। अगर सभी पास हैं तो अच्छी बात है, लेकिन पेपर के टाइम तो पता पड़ जाता है। उस समय थोड़ा आंसू बहा देते हैं। (आप इन सबको पास करा देना) इतनी अगर मेरे को छुट्टी है तब तो बहुत अच्छा, मैं तो सभी को पास करा देती, पर यह होना ही नहीं है। (दादी, धर्मराज के साथ आप भी बैठेंगी ना) बैठना तो उनके साथ ही पड़ेगा। (तो दादी जब यह दिल्ली वाले आयेंगे तो इन सबको पास करा देना) नहीं। यहाँ तो पहचानते हैं, लेकिन वहाँ कहाँ याद रहेगा कि यह दिल्ली के हैं.. इसलिये हाँ कहे और कर न सकें तो भी खराब है। (तो फिर सभी को पास करा देना) तो जो यहाँ के नियम हैं वो तो तोड़ेंगी ना। (दादी, हम आपको नियम तोड़ने नहीं देंगे, हम सब पास होके आयेंगे) हाँ, यह जवाब दो। अभी तक तो सभी पास हैं, आगे चलकर पूरा पता पड़ेगा। (दादी किस प्रकार की परीक्षायें आयेंगी? स्टूडेन्ट के साथ या आपस में?) यही जो आपस में पेपर आता है, उसमें भी पास होना है लेकिन कई बातें अलबेलेपन के कारण हो जाती हैं। मतलब पास होना है जरूर। वो टाइम जो है ना, उसमें सब बातों को भूलना पड़े। पढ़ाई के टाइम और कोई बात नहीं। अगर सच्चे हैं तो सच्चे पर साहेब राज़ी रहता है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“एकरस स्थिति बनाने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ”

1) एकरस स्थिति बनाने के लिए देखते हुए भी न देखो- यह अच्छी साधना है। कोई कहते देखते हुए भी न देखें फिर भी दिखाई पड़ता है। कितना इसका अभ्यास करने बिना एकरस स्थिति बन नहीं सकती। जिसे घर की याद होगी, उपराम वृत्ति होगी - वह देखते हुए भी नहीं देखेंगे। जिसके अन्दर पुरानी दुनिया से सन्यास की वृत्ति होगी, जो अन्दर से चेकिंग करते मेरा कहीं लगाव झुकाव तो नहीं है, वह भी देखते हुए नहीं देखेंगे। किसी के तरफ रग जाना ही नुकसान है। बगुले के तरफ रग है तो वह खींचकर अपने समान बनायेगा। यदि दिखाई पड़ता है – यह हंस है और रग गई तो भी फरिश्ता नहीं बन सकते।

2) जब तक रीयल रुहानियत की खुशबू नहीं आई है तब तक एकरस स्थिति नहीं बन सकती। रुहानियत का रस सुख शान्ति देने वाला रस है। रग है तो खुद भी उस रस में नहीं रह सकता है, जहां रग जाती है उसकी खींच होगी, बाबा से रुहानी रस खींच नहीं सकता। जैसे बहुत सूक्ष्म माँ के गर्भ में नाभी से बच्चे को खाना मिलता है। इतना सूक्ष्म सम्बन्ध जितना मात-पिता से है, उतना मात-पिता की सूक्ष्म शक्ति उसे जन्म देने वा पालना देने में मदद करती है। जिन्हें वह रस मिला है उनकी कहाँ रग नहीं जा सकती। यह रस अनुभव किये बिना ईश्वरीय सन्तान का नशा नहीं चढ़ेगा। शूद्र से ब्राह्मण बन गये बहुत अच्छा, पर ब्राह्मणों में भी नम्बरवार हैं। ब्राह्मण एक धामा खाने वाले होते हैं, गृहस्थी के हाथ का भी खा लेते हैं। दूसरे पुष्करणी ब्राह्मण होते हैं कोई रास्ता दिखाने वाले पण्डे होते हैं, कोई जन्मपत्री वाचने वाले होते। कोई किसकी ग्रहचारी हटाने वाले, किसी की सगाई कराने वाले होते। जन्म-मृत्यु, शादी किसी भी कार्य में ब्राह्मण के बिना काम नहीं चल सकता। तो देखना है हम ब्राह्मण किस योग्य हैं। कोई करनीघोर भी होते हैं, मरे हुए का कपड़ा पहन लेंगे। जैसे भूखे ब्राह्मण हैं। जैसा ब्राह्मण होता है उसको वैसा ऑफर करते हैं। उसे वैसी दक्षिणा वैसा खाना मिलता है। अपने को देखना है – हम ब्रह्मा मुख वंशावली हैं, सो मेरी स्थिति कैसी है। पुरानी दुनिया से मुख मोड़ने में भी जो युद्ध करते वो सच्चे ब्राह्मण नहीं हैं, जिसकी पूरी इंगेजमेन्ट नहीं हुई है वो दूसरे की शादी क्या करायेंगे।

3) बाबा का बच्चा बनते ही अपनी स्थिति पर ध्यान हो। हमारी स्थिति कोई हिला नहीं सकता, नीचे ऊपर नहीं कर सकता। कितने भी विघ्न आयें, एक बल एक भरोसे के आधार पर स्थिति बहुत अच्छी बनती है। जिस आधार से स्थिति अच्छी बनती है वो लिस्ट अपने पास रखनी चाहिए। जिस बात का लक्ष्य रखकर अनुभव करना हो उसकी लिस्ट बनानी चाहिए। समझो मुझे एकरस स्थिति बनानी हो तो किस-किस बात की लिस्ट बनाऊं? पहले अन्तर्मुख रहूँ। बाह्यमुखता घड़ी-घड़ी खींचे नहीं फिर एकाग्रचित रहने की आदती बनते जायेंगे। एकाग्रचित बनने के लिए समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, सहनशक्ति चाहिए। कोई भी शक्ति की कमी है तो एकाग्रचित नहीं बन सकते। सहनशक्ति की कमी एकाग्रचित बनने नहीं देती। विस्तार से बोलने वाला, विस्तार से सोचने वाला एकाग्रचित नहीं बन सकता। समाने की शक्ति है तो मास्टर ज्ञान सागर बन सकते। एकाग्रचित बनने के

लिए सहनशक्ति, समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति ऐसी हो जो बीती को बीती कर दे। पास्ट को पास्ट कर दे, फुलस्टाप लगा दे। एकाग्र होकर बाबा को याद करना शुरु कर दे। कुछ भी हो रहा है - रिंचक मात्र भी हलचल न हो। क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ, यह न हो। फुलस्टाप देने की जब तक आदत नहीं है तब तक एकाग्रचित नहीं बन सकते। एकाग्रचित नहीं बन सकते तो एकरस स्थिति दूर हो जाती है। एकाग्रचित रहने वाला बाबा से गुप्त शक्ति ले सकता है। फिर ऐसे फील होगा कि यह शक्ति आत्मा को चला रही है। फालतू बातों में समय गंवाना छोड़ दो। बाबा से लिंक जुटी हुई हो। आनन्दमय स्थिति बन सकती है। एकरस स्थिति बनाना माना आनन्दमय स्थिति को पाना उस आनन्द में सुख शान्ति प्रेम तक समाया हुआ है। अलग नहीं है। जब आनन्दमय स्थिति में चले जाओ तो सुख शान्ति प्रेम सब आ जाता है। आनन्दमय स्थिति मात-पिता के समान बनने में मदद करती है। तो सब बातों को छोड़ पिता को फालो करो। जो एक बाबा को देखता है उसे और कुछ दिखाई नहीं पड़ता। जो बाबा को फालो करता है उसके हर कदम में कल्याण हैं। हम कितने भाग्यशाली हैं जो कल्याणकारी बाबा के कदमों पर कदम हैं। देवताओं के कदमों में पदम इसीलिए दिखाये जाते हैं। क्योंकि उन्होंने हर कदम पर फालो फादर किया है।

4) बाबा ने हम बच्चों को याद दिलाया है - बच्चे यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, तुम देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलो। बाबा ने हमें यज्ञ सेवाधारी बनाया तो हम ब्राह्मण बनें। ब्राह्मण न बने तो देवता नहीं बन सकते। बाबा ने गोद में लिया, यज्ञ रचा सेवा कराने के लिए। बाबा का बच्चा बनने से, सेवाधारी बनने से ब्राह्मण बन गये। जैसे शिवबाबा का नाम गुणवाचक है, ऐसे हमारे गुण कर्तव्य पर नाम मिला ब्राह्मण। हमारा बाप वृक्षपति है, कल्याणकारी है, जिसे यह याद है उसके ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। ग्रहचारी किस पर आती है? धन, सम्बन्ध और शरीर। इन तीनों पर ग्रहचारी आ नहीं सकती। जब वृक्षपति बाप के बच्चे बने तो शरीर की ग्रहचारी भी चली गई, सम्बन्ध में सुख है, झगड़ा हो नहीं सकता। सम्पत्ति में भी किसके सामने हाथ नहीं फैला सकते। दाता के बच्चे हैं। ब्रहस्पति की दशा है। वृक्षपति बाप के बच्चों को सुख देखना है जरूर। मैं वृक्षपति बाप का बेटा हूँ – यह वरदान सदा याद रहे। अगर ब्रह्मामुखवंशावली हूँ तो सबकी जन्मपत्री वाचने देखने वाला हूँ। सफलता का सितारा हूँ– हमारे ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती। अगर आती है तो हटा देनी चाहिए। हट सकती है। जो अच्छे ऊंचे ब्राह्मण हैं वो औरों की भी ग्रहचारी हटा देते हैं। नीच ब्राह्मण जादू मंत्र डालने वाले होते हैं। वो हैं जैलसी वाले ब्राह्मण। किसी को सुखी देख सहन नहीं कर सकते। कोई ऐसे भी हैं जो एक दो से काम्पटीसन करते रहें, भेंट करना, क्रिटिसाइज करना – यह ऊंचे ब्राह्मणों का धंधा नहीं है। उनकी एकरस स्थिति बन नहीं सकती। उन्हें अन्दर से सबकी दुआयें मिल नहीं सकती। अगर स्थिति अच्छी है तो सबकी दुआयें मिलेंगी। वो किसी को भी न देख एक ईश्वर को देखेगा। न पुरानी दुनिया को देखेगा न यहाँ किसी को देखेगा। क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, हमको क्या करना है। क्या मुझे चेकिंग करने की ड्यूटी मिली हुई है। हरेक को ड्यूटी मिली है – अपने आपको सम्भालने की। जो अपने आपको नहीं सम्भालता उसे बाबा कोई ड्यूटी नहीं देता। मुझे कोई नहीं सम्भाले नहीं तो बर्डन (बोझ) हो जायेगा। मैं कोई छोटी बेबी थोड़े ही हूँ, जो घड़ी-घड़ी हमें कोई सम्भालता रहे। हमारा ध्यान रखे। इतना छोटा तो नहीं बनना है। तो मुख्य बात है अपनी स्थिति को अन्दर मजबूत बनाना है। सयाना वह है जो अन्दर की लगन में मगन रहे। लगन को कम न करे। तो एकरस स्थित बनाने के लिए अन्तर्मुखी बनो।

5) बीती बातों का ख्याल कर रोना नहीं है, अगर रोते हैं तो एकरस स्थिति नहीं हैं। स्थिति नीचे ऊपर तब होती है जब हमारी मर्जी से काम नहीं होता है। मेरी मर्जी कहाँ से आई। हमारी सदा शुभ भावना शुभ कामना रहे। ड्रामा की नूँध है। हम कभी लड़ाई-झगड़ा कर नहीं सकते क्योंकि हमें अपकारियों पर उपकार करना है। मुख चलाना नहीं है। अगर मुंह बदल भी जाता है तो यह भी ठीक नहीं है। अब तक भी इस प्रकार के संस्कार हैं तो ठीक नहीं। इसके लिए जितना चेक करेंगे उतना अच्छा है। चेक वह कर सकता है जो अन्तर्मुखी है, जिसे एकरस स्थिति बनाने का लक्ष्य है। किसी भी बात को न देख अपने को देखो। सी फादर...। जो बाबा को नहीं देखता उसे बाबा भी नहीं देखता। जो अपने को चेक करता है उसे फट से पता चलता है मेरे में क्या कमी है। जो अपनी कमी को स्वीकार करता है बाबा उसे इशारा देता है, किसी के द्वारा दे देगा या स्वप्न में दे देगा। हमको कम्पलीट बनना है, बाबा को बनाना है। तो बाबा कोई कमी रहने नहीं देगा। अगर मुझे अपने में कोई कमी नहीं रखनी है तो कमी का पता जरूर चलेगा। सम्पूर्ण देवता बनने वाले बच्चे इशारे से समझते हैं। जिसको एकरस स्थिति बनानी है वह ईशारे से समझ जायेंगे। विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है। तो मुख्य बात है सब बातों को छोड़ अन्दर से सन्यास वृत्ति रखो। सबसे बड़े सन्यासी तो हम हैं। सारी दुनिया को छोड़कर जा रहे हैं, इससे कोई भी प्रीत नहीं। अच्छा।

6) सच्चाई और स्नेह हमारी भावना से निकल न जायें। जहाँ सच्चाई की भावना है। वहाँ कुछ भी कहो, सामने वाले को भाता है। जहाँ स्नेह नहीं है, शब्द हैं तो वो दिल को लगते हैं। हमारा हर आत्मा के प्रति सच्चा स्नेह हो। कल्याण की भावना हो। बाबा जितना स्नेह हमें देता है उससे हम अच्छा बनकर दिखायें। एक्जैम्पल बनें। अच्छा– ओम् शान्ति।